विद्या भवन बालिका विद्यापीठ

शक्ति उत्थान आश्रम लखीसराय

विषय संस्कृत दिनांक 02-03-2021

वर्ग सप्तम शिक्षक राजेश कुमार पाण्डेय

एन० सी० ई० आर० टी० पर आधारित

उपसर्गेण धात्वर्थः बलादन्यः प्रतीयते।

प्रहाराहारसंहारविहारपरिहारवत्।।

अर्थात् उपसर्ग से जुड़ने पर धातु का (मूल) अर्थ भिन्न हो जाता है। जैसे - 'हार' शब्द का अर्थ पराजय या माला है, किन्तु उपसर्ग लगने पर उसका अर्थ बिलकुल अन्य ही हो जाता है।

प्र+ हार = प्रहार = मार, चोट

आ + हार = आहार = भोजन

सम् + हार = संहार = विनाश

वि+ हार = विहार = भ्रमण

परि + हार = परिहार = वर्जन

धातुओं पर उपसर्गों का प्रभाव तीन प्रकार से होता है

धात्वर्थं बाधते कश्चित् कश्चित् तमनुवर्तते।

विशिनष्टि तमेवार्थमुपसर्गगतिस्त्रिधा।।

१. कहीं वह उपसर्ग धातु के मुख्य अर्थ को बाधित कर उससे बिल्कुल भिन्न अर्थ का बोध करता है। जैसे-

भवति = होता है।

परा भवति = पराजित होता है।

अनु भवति = अनुभव करता है।

परि भवति = अनादर करता है।

२. कहीं धातु के अर्थ का ही अनुवर्तन करता है। जैसे-

लोकयति = देखता है।

बोधति = जानता है।

अवलोकयति = देखता है।

अवबोधति = जानता है।

आलोकयति = देखता है।

सु बोधति = जानता है।

वि लोकयति = देखता है।

३. कहीं विशेषण रूप में उसी धात्वर्थ को और भी विशिष्ट बना देता है। जैसे

कम्पते = काँपता है।

प्रकम्पते = प्रकृष्ट रूप से काँपता है।

आकम्पते = पूरी तरह से काँपता है।

वि कम्पते = विशेष रूप से काँपता